।। ऊँ ह्रीं श्री अर्हम् श्री आदिनाथायः नमः ।।

लेखन, प्रकाशन, संकलन व संपादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला–बड़गांव लिंक रोड़,
उदयपुर–313011 (राज.)
फोन : 0294–2450253, मोबाइल : 09461384906
वेबसाईट : www.mewarjaintemple.com

श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) तीर्थ
मेवाड़ (उदयपुर)

प्रकाशक

श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट, मुम्बई

(प.पू. आचार्य देव श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. आदि
विशाल परिवार का वि.सं. 2070 का **पालीताणा**
में यशस्वी चातुर्मास में प्राप्त ज्ञान निधि की राशि से)

लेखक, संकलक एवं मुख्य संपादक

मोहनलाल बोल्या

सह–संम्पादक

हरकलाल पामेचा

मु.पो. देलवाड़ा,
जिला राजसमन्द (राज.)
फोन : 02958-289067
मो. 94685 79070

सहयोग राशि :

मय कोरियर चार्ज - रुपये 250/-

सर्वाधिकार

लेखक के अधीन

संस्करण - 2014

डिजाईनिंग

वेव ग्राफिक्स, उदयपुर
उदयपुर, मो. 98292 44710

मुद्रक :

श्री सरस्वतीदेवी (जैन परंपरा), सेवाड़ी

समर्पण

सभी आचार्य प्रवर के जीवन को पढ़ा, देखा,
उनकी सौम्य मूर्ति को यह ग्रंथ समर्पित...

।। जिनाय नमः ।।

आशीर्वचनम्

प.पू. प्राचीन श्रुतोद्धारक गुरूदेव श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वचनम्

समस्त चतुर्विध श्रीसंघ रात्रिक प्रतिक्रमण में 'संकल तीर्थ' सूत्र में बोलता है -

जिन गाम नगर पुर पाटण जेह
वर चैत्य नमु गुणगेह

अर्थात् जिनेश्वर देव का जिनालय साक्षात् गुणालय स्वरूप है, वह जो भी गांव-शहर आदि में हो, मैं उसे भाव से वंदना करता हूँ।

सूत्र की इस एक ही पंक्ति का यदि विस्तार किया जाये, तो जीवन समाप्त हो जाये, किन्तु अर्थ समाप्त न हो, उतने - विराट संख्यक जिनालयों से इस मनुष्यलोक में कही वसुंधरा अलंकृत है। काश ..... हम उन सभी चैत्यों की यात्रा कर पाते.....

तथापि हमारा यह सौभाग्य है कि हमें जब भी अवकाश मिले, एक नये अपूर्व चैत्य की यात्रा हम कर सकते हैं।

सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोल्या के इस प्रयास ने हमारे सौभाग्य को उदयावसर दिया है, सकल श्रीसंघ यथावसर इस प्रयास को सार्थक करे ऐसा शुभकामनायें एवं असीम आशीष के साथ ....धर्मलाभ...

आ.शु. 7, सांचोरी भवन, सिद्धाचल महातीर्थ

आचार्य हेमचंद्र सूरि

प्रस्तावना

शंत्रुजय तीर्थ : यह है पावन भूमि, यहां बार बार आना

वर्धमान तपोनिधी आचार्यदेव श्रीमद विजय कल्याणबोधि सूरीश्वरजी म.सा. की ओर से

आकाश कॉलेज से घर आ रहा था। पहले कैम्पस आया . ..... जो अभद्रता का नमूना जेसा था। रास्ते में इधर-उधर देखते आकाश को कुछ बोर्डस्, पोस्टर्स नजर में आये, जिन में व्यवसायिक विजय हेतु अभद्रता का शस्त्र प्रयुक्त किया हुआ था। घर में आकर आकाश ने टी.वी. ऑन कर दिया। स्थिति ऐसी हो गयी कि यदि कोई सज्जन वहां विद्यमान हो, तो उसे शर्माना पड़े। थोड़ी देर बाद कंटाल कर आकाश ने न्यूज पेपर खोला ..... मानो अभद्रता के डिपार्टमेन्टल स्टोर का ओपनिंग हो गया। रात को आकाश अपने रूम में चला गया। मोबाईल का नेट ऑन हुआ और .....

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य के शब्दों में कहूँ, तो आलप्यालमिदम् जाने दो, नहीं कहना इस बात को।

बात केवल आकाश की नहीं, आप की भी है। आखिर क्यों चारों ओर से अभद्रता ही प्रस्तुत हो रही है ? यदि आप यह प्रश्न किसी मिडीया वाले को पूछेंगे, तो वे कहेंगे, Because you Like it"

Well वास्तव में आप जिसे अपने जीवन का अमूल्य समय दे रहे हैं, उनका यह दायित्व बनता है कि वह आप को कुछ ऐसी चीज दे, जो आपका हित करती है। आपने स्वार्थ हेतु आपका Wealth - Point का फायदा उठाकर जो आप को अहितकारक चीज दे रहे है, वे आपके शत्रु है, शुद्ध शत्रु।

आपके मित्र वो है, जो आपके हितचिन्तक है एवं आपको हितकारक चीज देते है। ऐसे ही एक मित्र के स्वरूप में उभर आये है सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोल्या, जो अभद्रता के इस विषमय काल में आपके लिये अमृत का उपहार लेकर उपस्थित हुए है। समझ लो कि टी.वी. आदि सभी माध्यम हलाहल जहर है, अनन्त मृत्यु का यह पथ है और आपके हाथो में जो उपहार है, वह परम अमृत है, यहाँ अमरता का वरदान है।

विश्व में परम दर्शनीय कोई है तो वे है परमात्मा तथा परमात्मा का मंदिर। विश्व में परम श्रव्य कुछ है तो वह है परमात्मा की कथा। पूर्ण ममता से इस अमृत का पान करना, पुनः पुनः इन जिनालयों की भावयात्रा करना, अवसर मिले तो धरती के इस स्वर्ग की मुलाकात लेना। परमात्म भक्ति तो सर्व सुखों की जननी है। हिताय जननी - यहां आपकी परम हितस्विना हे। चलो देखते है, आप किसे समर्थन देते है ? शत्रु को या मित्र को

भादवा सुद

सांचोरी भवन, श्री सिद्धाचल महातीर्थ

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरि.

आशीर्वाद सन्देश

प्राचीन श्रुतोद्धारक आचार्य श्रीमद हेमचंद्रसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य प. पू. पं. श्री अपराजित विजय जी म.सा. की ओर से

धर्मप्रेमी देव गुरू भक्ति कारक, नमोकार मंत्र आराधक सुश्रावक मोहनलालजी बोल्या,

धर्मलाभ

आत्म उन्नति का जिन शासन में आत्म विश्वास का क्रमिक मार्ग बताया है। आत्म उन्नति का प्रारम्भ भगवान की भक्ति, पूजा व भगवान के आलम्बन में होती है। आलम्बन से असीम ऊर्जा प्राप्त होती है, धर्म की आराधना करने की शक्तियों का विकास होता है। आलम्बन की प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि जिन मंदिर व जिन प्रतिमा की द्रव्य भक्ति व भाव भक्ति विद्यमान हो, ऐसे ही सुश्रावक श्री मोहनललालजी बोल्या है जिन्होंने उदयपुर नगर, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ व भीलवाड़ा जिलें के सभी प्रगट - अप्रगट मंदिरों व प्रतिमाओं का आलंबन कर अपने आपको धन्य किया है, साथ में ही इनकी पुस्तकें प्रकाशन करा हम सभी को भावपूर्वक भक्ति व दर्शन करने का सुअवसर दिया है।

श्री बोल्या द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में मेवाड़ क्षेत्र को पूर्ण किया, अब उदयपुर संभाग (डिवीजन) के शेष वागड़ प्रदेश के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों (डूंगरपुर बांसवाड़ा जिले के) का इतिहास के साथ प्रकाशित करा रहे है। इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात उदयपुर संभाग के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों का इतिहास के साथ रचना कर प्रशसनीय कार्य किया है। ये सभी पुस्तकें एक दस्तावेज की तरह उपयोगी होगी और साधु-साध्वी भगवंतों के विहार के समय मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी होगी।

इस प्रकार आपका पुरूषार्थ सार्थक और सफल बनेगा। आशीर्वाद के साथ...धर्मलाभ

द. अपराजित विजय

(पं. अपराजित विजय)

आशीर्वाद सन्देश

मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य देवश्री जितेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य
प.पू. पं. श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. की ओर से आशीर्वाद सन्देश

श्री बोलिया जी

सादर धर्मलाभ ।

उदयपुर नगर से प्रारंभ कर आपने देलवाड़ा फिर मेवाड़ के पांचों जिलों के जिन मंदिर व उनकी प्राचीनता आदि के लेख तीन भागों में अद्वितीय संग्रह किया है। साथ ही आपकी भावना थी कि मेवाड़ से लगा हुआ श्री केसरियाजी तीर्थ धुलेवा से जुड़ा हुआ वागड़ प्रदेश डुंगरपुर - बांसवाड़ा जिले के जिन मंदिरों व प्रतिमा जी व उनके शिलालेख आदि का प्राचीनता का संग्रह किया जाए, अनुकरणीय व अनुमोदनीय कार्य आपने किया है ।

यह आपका सत्प्रयास इन जिन मंदिरों का भविष्य में इतिहास बनेगा व इन जिनालयों से जुड़ी प्रोपर्टी को सुरक्षित रखने में संबल प्रदान करेगा साथ ही मेवाड़ वागड़ की तीर्थयात्रा में संग्रह उपयोगी कार्य करेगा व तीर्थयात्रा में सुलभता रहेगी।

परमात्मा से यही प्रार्थना कि आगे भी शासन देवता आपको ऐसी ही शक्ति प्रदान करे जिससे शासन के कई कार्य सुसंपन्न हो ।

उदयपुर

दिनांक 5.9.2014

प. श्री निपुणरत्नविजय जी म.सा.

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

पं. पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक वैराग्य
देशना दक्ष आचार्य देव
श्रीमद् विजय श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी महाराज

एवं

वर्धमान तपोनिधि आचार्य देव श्रीमद् विजय
श्री कल्याणबोधिसूरीश्वर जी महाराज की प्रेरणा से

तथा

प.पू. आचार्यदेव श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

आदि विशाल परिवार का वि.सं. 2070 का **पालीताणा**
में यशस्वी चातुर्मास हुआ जिसमें प्राप्त
ज्ञान निधि की राशि से

श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट

ने पूर्ण लाभ लिया है ।
सभी की हम भूरी भूरी अनुमोदना करते हैं।

खूब खूब अनुमोदना

संपादक की कलम से

धर्म, मंदिर, प्रतिमा का सार अपूर्व महिमावान है। इसका गुण अनेक है, सुर, नर, मुनि, योगी, इंद्र आदि इसका गुण गाते है और ध्याते है। तीर्थंकर की प्रतिमा की पूजा जैन धर्म में विश्व में सर्व श्रेष्ठ है, शुद्ध-श्रद्धा से पूजा करने वालों को कुछ दुष्प्रायः नहीं है। यह आत्मा को पवित्र बनाकर आत्म ज्योति का प्रकाश करता है। इसी कारण से मंदिर में स्थापित प्रतिमा की प्रमाणिकता व चमत्कारिता का स्वयं को ज्ञान हो जाएगा। मंदिर की प्राचीनता का वर्णन करते समय प्रतिष्ठा का भी वर्णन किया है। जिसका अभिप्राय यह है कि पूर्वाचार्यों द्वारा अंजनशलाका प्रतिष्ठा की श्रेष्ठता के प्रति आस्था होती है ओर आस्था ही श्रद्धा का केन्द्र बिंदु बनता है। आस्था मन से उत्पन्न होती है और इस आस्था को हम यदि अपने आचरण में लाते है तो निष्ठा बनती है। जब यही निष्ठा अपने जीवन में परमात्मा को प्राप्त करने के लक्ष्य को भक्ति के माध्यम से प्राप्त करने के प्रयास को मुक्ति द्वार कहा जा सकता है। अतः श्रद्धा-निष्ठा वह गुण है जिससे हमे सफलता की ओर अग्रसर करता है लेकिन वर्तमान युग में मनुष्य में श्रद्धा व निष्ठा का अभाव है यही कारण है कि मनुष्य शक्तिहीन हो रहे है।

इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में प्रतिमा का गढ़न, प्रतिष्ठा कराना, विराजमान कराने का संपूर्ण कार्य एक व्यक्ति विशेष (पूंजीपति) को प्राप्त होता है जो न श्रद्धावान और न ही निष्टावान होता है। श्रद्धावान, निष्ठावान का अवसर प्राप्त नहीं होता है जिससे वह धर्म से विमुख होता जाता है, यही कारण है कि युवा-पीढ़ी मे भक्ति भाव, पूजा भाव आदि की कमी हो जाने से मंदिर में पूजा करने वालों की संख्या निरंतर कम हो रही है। श्रद्धा व निष्ठा विहिन व्यक्ति केवल धन का उपयोग करने व नाम की लोलुपता के कारण प्रतिमा गढ़न, प्रतिष्ठा आदि कार्य से धन का उपयोग करता है। शास्त्रों के अनुसार शुद्ध भाव से स्व अर्जित धन से धर्म कार्य किये जाने से प्रभाविकता व चमत्कारिता की ऊर्जा उत्पन्न होती है जो नहीं है।

यदि दोषरहित धन का उपयोग होता है तो मनुष्य की स्वयं की भावना व भक्तों की भावना श्रद्धा-निष्ठा से जुड़ जाती है जिससे असीम पुण्यों का सृजन होता है जिससे सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है। युवा पीढ़ी धर्म की ओर अग्रसर होगी और उसके ममत्व को समझेगी और उनका जीवन विरक्तियों रहित होगा और धर्म से अनुराग बढ़ेगा।

वागड़ क्षेत्र के मंदिरों की संख्या कम अवश्य है लेकिन इस क्षेत्र के मंदिरों की व्यवस्था, नियमित पूजा करने वालों की संख्या व रूचि को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि धर्मप्रेमियों के लिए धर्म के प्रति जागृति का एक अनुकरणीय उदाहरण है।

अंत में मेरी अभिलाषा है

हे देवाधिदेव :

आप देवाधिदेव तुल्य है एवं चित्य अचिंत्य सभी पदार्थों को परम पद प्रदान करने के लिए

हे देव - आप मुझ, सभी पर अनुग्रह करे

आपकी वंदन दर्शन पूजन से सुविशुद्ध

मृत्यु- जीवन तथा समाधि शुद्ध परिणिति की आत्मानुमति तथा परम पद मुझें प्राप्त हो

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस ग्रंथ की रचना की गई है।

इस ग्रंथ की रचना में प्रेरणादायक प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोंद्धारक वैराग्य देशनादक्ष आचार्यदेव श्रीमद् हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा. व पं. पू. वर्धमान तपोनिधी आचार्य देव श्रीमद् विजय कल्याण बोधि सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा, आशीर्वाद से यह ग्रंथ पूर्ण हो सका जिनका मैं हार्दिक अभिनंदन करते हुए नतमस्तक आभारी हूँ और आपके सदुपदेश से ही यह प्रकाशन हुआ। आप सभी को धन्यवाद व आभार ज्ञापित करता हूँ।

(मोहनलाल बोल्या)

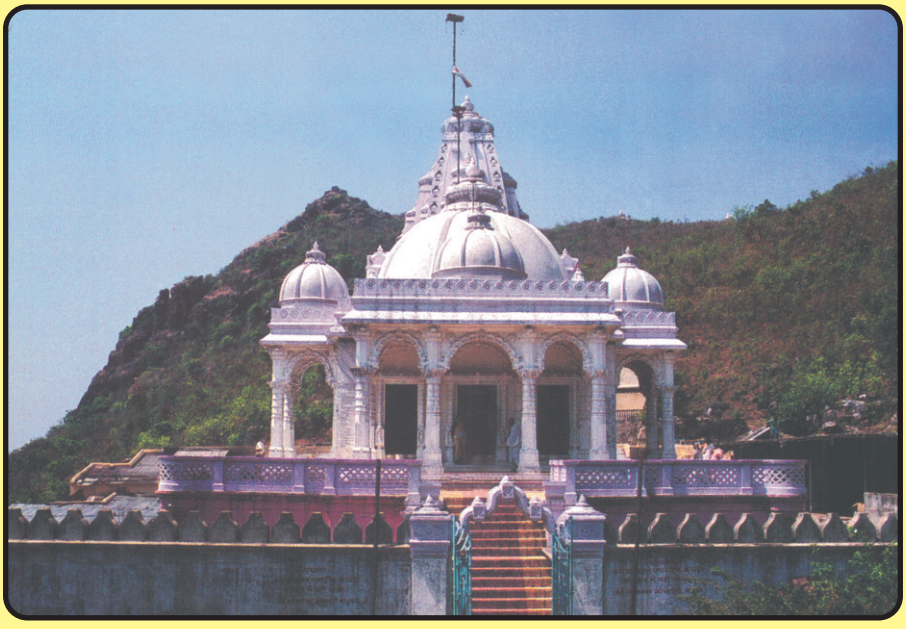

वनयुक्त पहाड़ों के बीच जल मन्दिर का एक अपूर्व दृश्य – सम्मेतशिखर

सह–संपादक के विचार

मेवाड़ राज्य का गौरवशाली इतिहास रहा है, यह धरती धर्मवीरों एवं शुरवीरों की पावन स्थली रही है। वागड़ प्रांत का भी अपना गौरवशाली इतिहास है, यहां के देवालय, जिनालय भी बहुत ही प्राचीन है एवं ऐतिहासिक है। भारतीय संस्कृति के चिर शाश्वत आधार स्तम्भ देवालयों, जिनालयों एवं मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के पुनित कार्य में परम श्रद्धेय सुश्रावक ध्येय निष्ठ, समर्पित व्यक्तित्व के धनी, अनेक धार्मिक ग्रन्थों के सृजनकर्मी माननीय श्री मोहनलाल जी बोल्या ने मुझे सुयोग्य समझकर मेवाड़ संभाग के देलवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ जिलों के सभी मंदिरों के सर्वेक्षण कार्य एवं भीलवाड़ा जिलें के सभी मंदिरों एवं राणकपुर तीर्थ के इतिहास लेखन के देवीय कार्य में सहयोगी संपादक के रूप में चयनित किया, यह मेरा सौभाग्य। वागड़ प्रांत के जिन मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के पुनित कार्य में भी पुनः आपने अपने सहयोगी के रूप में चयन कर जो मुझे सम्मान दिया है, इस हेतु आपका आभार प्रदर्शित कर अपने आपकों गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

मैं स्वयं इतिहास प्रेमी हूँ, इसी इच्छा शक्ति की वजह से पिछले कुछ वर्षों से इतिहास लेखन के परम पुनित कार्य में स्वयं भारतीय इतिहास संकलन योजना चित्तौड़ प्रान्त के संगठन सचिव के नाते अधिकारिक रूप से पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा हूँ। जिन शासन के इस देविय कार्य में सहयोग करना सौभाग्य का विषय है। मेवाड़ के पश्चात् वागड़ क्षेत्र के जैन मंदिरों के संर्वेक्षण के चुनौती पूर्ण कार्य को माननीय श्री बोल्या जी के साथ करना पारिवारिक बंधुओं के सहयोग बिना संभव नहीं हो सकता था। इस कार्य हेतु प्रेरणा देने हेतु मैं आभार प्रदर्शित करता हूँ मेरी धर्म सहायिका सुधर्मा श्रीमती प्रेम पामेचा एवं परिवार के सभी बन्धुओं का। एक बार पुनः स्मरण करता हूँ अपने स्वर्गीय पौत्र श्री रिषभ पामेचा स्व. माता-पिता, दोनों भ्राताओं को स्वः रिषभ पामेचा की मंद मुस्कान व स्मरण मेरे कार्य की प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। फोटोग्राफर श्री महेश जी दवे का योगदान भी किसी प्रकार से कम नहीं है, सुंदर एवं चित्राकर्षक फोटोग्राफी के कार्य को करने में जो सहयोग हमें प्राप्त हुआ है, उस हेतु आभार।

वागड़ प्रांत के डूँगरपुर, बांसवाड़ा जिलों के जिनालयों का सर्वेक्षण व इतिहास लेखन के जटिल कार्य का जो बीड़ा श्रीमान् बोल्या साहब ने उठाया एवं सहसंपादक के रूप में चयन कर मुझे गौरवान्वित किया है। यद्यपि इन जिलों में जैन मंदिरों की संख्या अन्य जिलों की तुलना में बहुत नगण्य है। लेकिन यहां के मंदिर बहुत ही प्राचीन एवं भव्य है। इन्हें देखने के पश्चात् जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास का स्मरण हो जाता है। मंदिर के सर्वेक्षण कार्य में यहां के धर्म प्रेमी सुश्रावकों का जो स्नेह, प्यार एवं आतिथ्य हमें प्राप्त हुआ वह चिर स्मरणीय रहेगा। गाँव छोटे-छोटे होने के बावजुद विशाल मंदिर है। हर जगह नियमित सेवा-पूजा होती है। धर्म के प्रति जागृति का सुन्दर उदाहरण यह वागड़ क्षेत्र है। सभी सहयोग करने वाले बंधुओं का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद। श्री जीवन जी कोठारी का भी बहुत-बहुत आभार।

एक बार पुनः मैं अपने इस पुनित कार्य को समर्पित करता हूँ श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या को। आपके निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता को पुनः नमन । श्रीमान् मोहनलाल बोल्या साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाजसेवी, धर्म प्रेमी, अच्छे लेखक, विचारक, चिंतनशील, मनिषी, महासभा दर्शन को नई दिशा देने हेतु प्रयत्नशील, जैन धर्म एवं संस्कृति के रक्षक, देवालयों एवं जिनालयों की दुर्दशा को देखकर व्यथित, जैन धर्म की विभिन्न सम्प्रदायों के प्रति समभावी मंदिरों के जीर्णोद्धार के पक्षधर एवं प्राचीन मंदिरों एवं देवालयों की सुरक्षा हेतु प्रयत्नशील, गुरू भगवन्तों के प्रति निष्ठावान श्रावक, सही को सही एवं गलत को गलत कहने वाला साहसी व्यक्तित्व, आगमों के जानकार, मंदिर संस्कृति की रक्षा हेतु प्रयासरत ।

(हरकलाल पामेचा)

सह संपादक का परिचय

नाम	:	हरकलाल पामेचा
माता	:	स्व. श्रीमती भूरीबाई पामेचा
पिता	:	स्व. श्री कन्हैयालाल जी पामेचा
जन्म स्थल	:	देलवाड़ा (मेवाड़) जिला-राजसमन्द
जन्म दिनांक	:	27.08.1945
शिक्षा		एम.ए. (इंग्लिश इको.), बी.एस.सी. , एम. एड.
व्यवसाय	:	राज्य सेवा से सेवानिवृत प्राध्यापक (अंग्रेजी)
धर्म सम्प्रदाय	:	जैन धर्म स्थानकवासी
धर्मपत्नी	:	श्रीमती प्रेम पामेचा, गृहीणी
प्रकाशन कार्य	:	इतिहास के पत्र वाचन-6, प्रकाशित आकाशवाणी वार्ता (1987) देलवाड़ा मूक साक्षी इतिहास के जैन मंदिर
संस्थागत कार्य	:	नागरिक विकास मंच अध्यक्ष-शिक्षा समिति, देलवाड़ा

सम्पादक मंडल

1. हेरिटेज पुस्तक का हिन्दी अनुवाद एवं संशोधन, हेरिटेज केलेण्डर का प्रकाशन, 2. मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग-3 सह सम्पादक, 3. इतिहास संकलन का कार्य 4. पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित (जैन मंदिर नागदा देलवाड़ा, संस्कृति), राजस्थान पत्रिका, उदयपुर एक्सप्रेस, खबर सम्राट, हलकारा-मुम्बई, सिद्धार्थ फाउण्डेशन-सूरत, नाथद्वारा, 5. पत्र वाचन : राष्ट्रीय एवं राज्य संगोष्ठी पर पत्र वाचन

लेखक के अन्तः मन की बात

इतिहास में भूतकाल की घटनाओं, सूचनाओं से समाज व सांस्कृतिक सूत्रों की खोज होती है। इन सूत्रों से ही धर्म साहित्य समाज के अनेक शास्त्रों की रचना होती है इसी प्रकार से हमारे आगमों की भी रचना (लिपिबद्ध) हुई।

कई राजा-महाराजा हुए, कई समाप्त हुए, राज्य बने, नष्ट हुए, शहर बने, उजड़े लेकिन कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म, प्रतिमा, लेख, शिलालेख जीवित रहते हैं। इन्हीं के आधार पर प्राचीनता सिद्ध होती है। इसी के आधार पर कलात्मक मंदिर उसकी प्राचीनता के आधार पर निष्प्राण खड़े रहते है। मैंने इस पुस्तक में भी लेख, शिलालेख व प्राचीनता पर बल दिया है। इन मंदिरों का वास्तुशास्त्र, शिल्पकला, दर्शन, विज्ञान, चित्रकला विज्ञान का वर्णन इतिहास से प्राप्त होता है।

इन्हीं बिंदुओं पर मंदिर संस्कृति की प्राचीनता को सिद्ध करते हुए जैन धर्म की प्राचीनता को ढूंढने का प्रयास करते हुए पूर्व में मेवाड़ के जैन तीर्थ व अन्य पुस्तको में विवरण प्रस्तुत किया।

वर्तमान में यह अनुभव किया जा रहा है कि प्राचीन मंदिरों को जीर्ण-शीर्ण के नाम पर या मंदिर में कई दोष बताकर मंदिरों का आमूल-चूल परिवर्तन कर प्राचीन मंदिरों को जमीनदोज कर नूतन मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है जबकि साहित्य में स्पष्ट वर्णन है :

> ''नवीन चेत्य निर्माण की अपेक्षा भविष्य में जिसके विलुप्त होने की सम्भावना है उस चेत्य को यदि हम रक्षा करे तो लगेगा कि इस शिल्प को हमने बनवाया है। कारण जब दुष्काल आएगा तब मनुष्य अर्थ, लोलुपता, तत्वहीन और कलाकृत्य विचारहीन होगा। इसलिए नवीन धर्मस्थान निर्माण करवाने की अपेक्षा पुराने धर्म स्थान की रक्षा हो, अधिक उपयुक्त है।'' हाँ यह अवश्य है कि बढ़ती हुई आबादी / कॉलोनी के आधार पर जहाँ आवश्यक है वहीं मंदिर निर्माण होना चाहिए।

फिर भी इसका तथ्य प्रतिपालन नहीं होता, यह भी लिखना न्यायसंगत होगा कि केवल नाम की लोलुपता के कारण ही ऐसा किया जा रहा है। यहां तक प्राचीन लेख व शिलालेखों की पट्टी भी तोड़ कर फेंक दी जाती है। जिससे उसकी प्राचीनता का ज्ञान किसी को नहीं हो सके, आने वाली पीढ़ी यही मानेंगे कि मंदिर 20वीं या 21वीं शताब्दी के निर्मित है। जबकि मूलतः ये मंदिर आज से 500-1000, 2500 व 3000 वर्ष प्राचीन है। हाँ यह भी नकारा नहीं जा सकता कि पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं की ऊर्जा उनके उत्थापन से शिथिल हो जाती है। जिससे प्रतिमा की प्रभाविकता, चमत्कारिकता में कमी आ जाती है जो पूर्व में थी।

उदाहरण यह भी है कि 500 मीटर के क्षेत्र में 4 प्राचीन मंदिर 250 वर्ष से स्थापित है और पूजा करने वाला नहीं हैं उसी क्षेत्र में पांचवां मंदिर निर्माण कराया जाकर प्रतिमा स्थापित कराई जाती है। अपूजित रहने से जो असातना होती है उसका दोषी कौन ? मंदिर निर्माण करने वाला, कराने वाला, प्रतिष्ठा करने वाला, कराने वाला, सभी दोष के भागीदार है।

इस ग्रंथ को तैयार करने के लिए निम्न साथियों का सहयोग प्राप्त हुआ है जिनका में हृदय से आभारी हूँ। आपके सहयोग के कारण क्षेत्र से मूलभूत सामग्री एकत्रित कर सका हूँ और यह ग्रंथ तैयार होकर आपके हाथों में है।

1. श्रीमती सुशीला बोल्या पत्नि मोहनलाल बोल्या (लेखक) ने अपनी स्व बचत से धन उपलब्ध कराया।
2. श्रीचंद जी सिंघवी निवासी ''पद्मश्री'' पाल लिंक रोड़, जोधपुर। साधुवाद
3. श्री सोहनलाल जी सुराणा निवासी सेवाडी (पाली) हाल-थाणे (मुंबई) आपका अनुज की तरह स्नेह प्राप्त हुआ।
4. श्री हरकलाल जी पामेचा निवासी-देलवाड़ा, अपना अमूल्य समय देकर प्रत्येक मंदिर तक साथ में रहकर सामग्री एकत्रित करने में सहयोगी रहे ।
5. श्री महेश दवे, निवासी देलवाड़ा ने अपना अमूल्य समय देकर सभी मंदिरों के फोटो उपलब्ध कराए।
6. श्री दलपतसिंह दोशी (पूर्व पार्षद) पुत्र स्व. श्री नन्दलालजी दोशी, उदयपुर
7. श्री अजय, गिरिराज कोठारी पुत्र श्री जीवनसिंह जी कोठारी, डूँगरपुर
8. श्री चन्द्रशेखर बोल्या पुत्र स्व. श्री भगवतसिंह जी बोल्या, उदयपुर
9. श्री दिनेश व श्री परमेश पामेचा पुत्र श्री हरकलालजी पामेचा, देलवाड़ा
10. श्रीमती नीरू पत्नी श्री राजेन्द्र लोढ़ा, उदयपुर (पुत्री मोहनलाल बोल्या)
11. श्री जैन श्वेताम्बर वासूपूज्य महाराज ट्रस्ट, उदयपुर (मुख पृष्ठ फोटो)
12. श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा (अन्तिम कवर पृष्ठ फोटो)
13. श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ संघ, डूंगरपुर (द्वितीय कवर पृष्ठ फोटो)
14. श्री नेमीनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट (श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाड़ संघ), डूंगरपुर (तृतीय कवर पृष्ठ फोटो)

वागड़ क्षेत्र के सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों
से जुड़े हुए सभी सदस्यगणों द्वारा
प्रदत्त सहयोग के लिए
हार्दिक आभार

मेरे विचारों से, लेखन से किसी के मन को आघात पहुंचा हो या जिन आज्ञा से विपरीत लिखने में आया हो तो सभी से क्षमायाचना करता हूँ यद्यपि स्थानीय सूत्रों से व साहित्य से जानकारी प्राप्त कर सामग्री संकलित की।

(मोहनलाल बोल्या)

मिथ्या दृष्टि द्वारा अपनाया गया सम्यग् ज्ञान भी मिथ्या ही मान लिया जाता है,
सम्यक्ज्ञान यदि मिथ्या ज्ञान को धारित करता है यह मिथ्या ज्ञान प्रतिभासित नहीं होता''

लेखक परिचय

नाम	:	मोहनलाल बोल्या
माता	:	स्व. श्रीमती गुलाबकंवर बोल्या
पिता	:	स्व. श्री रोशनलालजी बोल्या
जन्म स्थल	:	उदयपुर
जन्म दिनांक	:	15 जून, 1936
शिक्षा	:	एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	:	श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म-संप्रदाय	:	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	:	सेवानिवृत - जिला समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

1. उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
2. मेवाड़ का प्राचीन जैन तीर्थ : देलवाड़ा के जैन मंदिर
3. श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ-केशरियाजी
4. नमोकार मंत्र स्मारिका
5. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-1
6. नमोकार मंत्र - महामंत्र (मौन साधना मंत्र)
7. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-2
8. मेवाड़ के जैन तीर्थ - भाग-3
9. वागड़ के जैन श्वेताम्बर मंदिर
10. महासभा दर्शन मासिक पत्रिका जनवरी 2011 से लगातार

संस्थागत कार्य :

कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर की साधारण सभा

संयोजक : ज्ञान खाता

कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा

अनुक्रमणिका

शंत्रजुय तीर्थ

प्रकाशक
संपादक आदि

समर्पण –आचार्य भगवंत

प्रस्तावना
आ. श्री कल्याणबोधिसूरिजी

संदेश / आशीर्वाद
प. श्री निपुणरत्नविजयजी

ग्रंथ के द्रव्य सहायक –
आभार अनुमोदन

सम्पादक की कलम से
श्री मोहनलाल बोल्या

आशीर्वाद
आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी

सह सम्पादक के विचार
श्री हरकलाल पामेचा

संदेश / आशीर्वाद
प. अपराजितविजयजी म.सा.

लेखक के अन्त:मन की बात

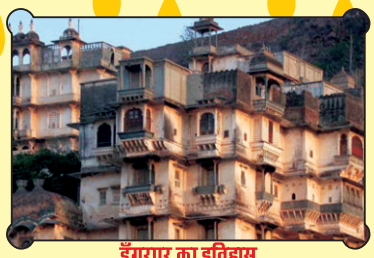

डूँगरपुर का इतिहास

डूँगरपुर जिले का नक्शा

1

श्री आदीश्वर भगवान मंदिर, डूँगरपुर

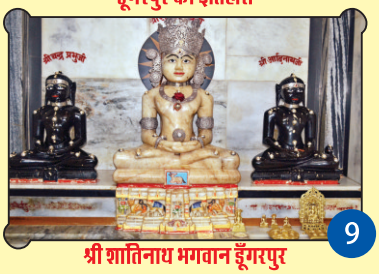

9

श्री शांतिनाथ भगवान डूँगरपुर

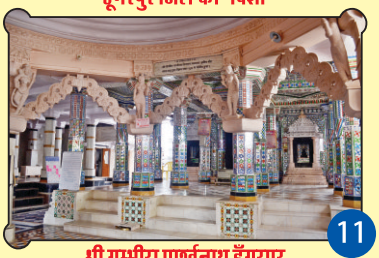

11

श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ डूँगरपुर

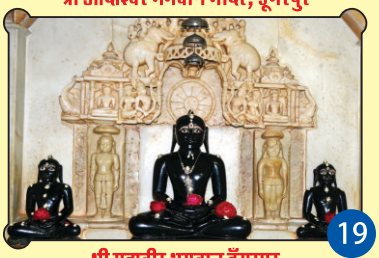

19

श्री महावीर भगवान डूँगरपुर

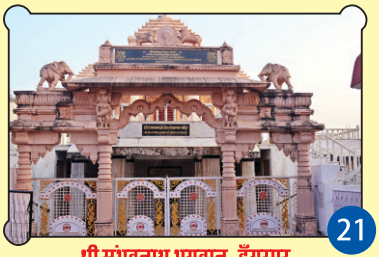

21

श्री संभवनाथ भगवान, डूँगरपुर

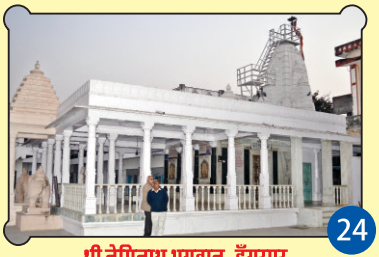

24

श्री नेमिनाथ भगवान, डूँगरपुर

27

श्री आदिनाथ भगवान, पुनाली

30

श्री आदिनाथ भगवान, बनकोड़ा

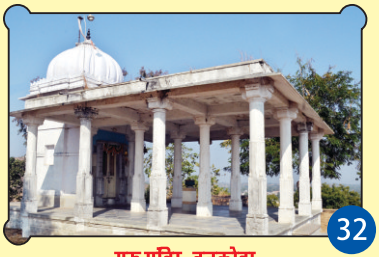

32

गुरु मंदिर, बनकोड़ा

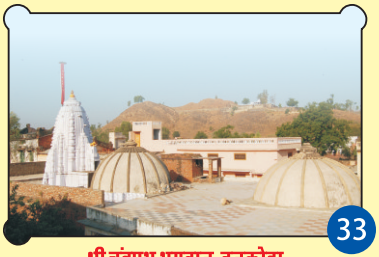

33

श्री चंद्रप्रभ भगवान बनकोड़ा

36

श्री अजितनाथ भगवान बनकोड़ा

38

श्री संभवनाथ भगवान पुँजपुर

42

श्री ऋषभदेव भगवान बड़ौदा (वट पद्रक)

46

श्री विमलनाथ भगवान, बड़ौदा

52

श्री आदिनाथ भगवान, काबजा

54

श्री आदिनाथ भगवान, माल

श्री चंद्रप्रभ भगवान, बोड़ीगामा बड़ा

श्री संभवनाथ भगवान, बोड़ीगामा छोटा

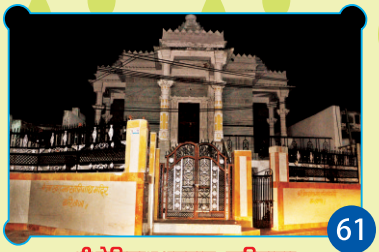

श्री नेमिनाथ भगवान, करियाणा

श्री धर्मनाथ भगवान, जोगीवाड़ा

श्री कुंथुनाथ भगवा, सरोदा

श्री संभवनाथ भगवान, गलियाकोट

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, सागवाड़ा

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान, सागवाड़ा

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान आसपुर

श्री सांवलिया पार्श्वनाथ साबला

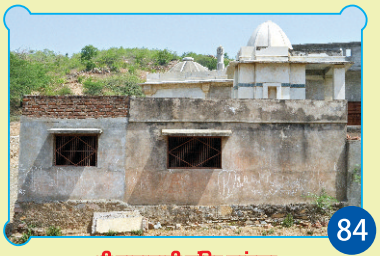

श्री दादावाडी मंदिर सांबला

श्री भीलड़िया पार्श्वनाथ मन्दिर – भीलड़ी

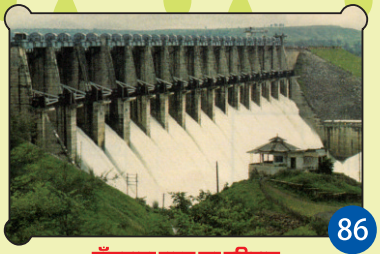

86

बाँसवाड़ा राज्य का इतिहास

88

बाँसवाड़ा राज्य का नक्शा

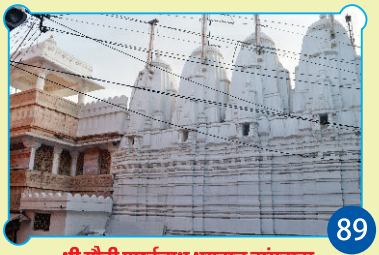

89

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान बांसवाड़ा

94

श्री पार्श्वनाथ भगवान, बांसवाड़ा

95

श्री चिंतामणि भगवान का मंदिर व दादावाड़ी, बांसवाड़ा

98

श्री आदिनाथ भगवान, बांसवाड़ा

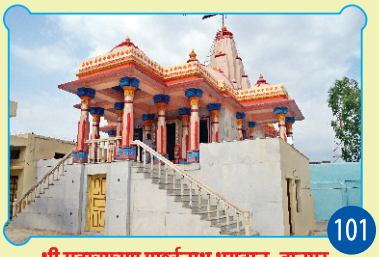

101

श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान, दानपुर

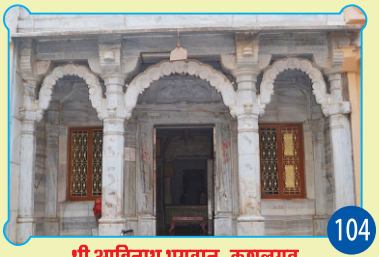

104

श्री आदिनाथ भगवान, कुशलगढ़

107

श्री शांतिनाथ भगवान, तलवाड़ा

109

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, घाटोल

111

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान, मोटा गाँव

संदर्भित पुस्तकों की सूची

114

देव-देवी के चित्र

115

भावी चौबीसी की संक्षिप्त जानकारी

116

महापुरूषों की सूचना एवं काल का विवरण

118

डूँगरपुर का इतिहास

डूँगरपुर राज्य का प्राचीन नाम वागड़ है जो गुजराती भाषा के ''वागड़ा'' से मिलता है इसका अर्थ जंगल है अर्थात् कम आबादी वाला प्रदेश। कुछ विद्वानों ने वागड़ को संस्कृत भाषा में ''वाग्वर'', वैयागड़'', वागट'' या ''वार्गट'' और प्राकृत भाषा में ''बागड़'' कहा है लेकिन शिलालेखों, ताम्रपत्रों में ''वागड़'' शब्द का ही प्रयोग हुआ है इसके प्रमाण में सं. 1242 वर्ष कार्तिक सुदि 15 का लेख वीरपुर (जयसमंद) में प्रयोग हुआ, सं. 1291 वर्ष पौष सुदि 3 में वागड़ वटपद्र में उल्लेख है, डूँगरपुर का भेरूगढ़ गांव के तालाब के निकट वैजवा माता मंदिर का लेख सं. 1308 वर्ष कार्तिक सुदि 15 में अद्देह वागड़ मण्डल झाड़ोल (जयसंमद) गांव का, शिव मंदिर मे लेख सं. 1343 वैशाख वदि 15, वागड़ वटप्रद महारावल वीरदेव सिंह के ताम्रपत्र की छाप सं. 1359 आषाढ़ सुदि 5 व सं. 1525 का लेख में भी इसी प्रकार का लेख है इसके अतिरिक्त सं. 1571 कार्तिक वदि 12, सं. 1593 वर्ष वैशाख वदि 1(प्रतिपदा) सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सं. 1051 का लेख जैन मूर्ति पर है वह राजस्थान संग्रहालय(अजमेर) में सुरक्षित है। प्राचीन वागड़ देश में वर्तमान में बांसवाड़ा राज्य व डूँगरपुर राज्य का समावेश हैं वागड़ देश की प्राचीन राजधानी बड़ौदा (वटपद्र) थी तभी से वागड़ को बांसवाड़ा व डूँगरपुर राज्य कहा जाने लगा।

डूँगरपुर राज्य का इतिहास का वर्णन किया जा रहा है। डूँगरपुर को गिरिपुर भी कहा गया है

डूँगरपुर राजस्थान में 23.20° से 24° उत्तर अंक्षास और 73.22° से 74.23° तक पूर्व देशांतर के बीच बसा हुआ है।

डूँगरपुर राज्य के चारों ओर अरावली पर्वत की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ है। जैसा कि पूर्व पुस्तकों में वर्णन किया है कि किसी भी देश/राज्य की प्राचीनता के लिए लेख, शिलालेख, दानपत्र, सिक्के, ताम्रपत्र आदि प्रमुख है और इनसे ही प्राचीनता प्रमाणिक होती है। डूँगरपुर की स्थापना के बारे में भिन्न-भिन्न विचार है।

गुहिलवंश के राजा माहप से डूँगरपुर स्थापना माना है व कुछ विद्वान रावल सामंतसिंह से स्थापना मानते है। जहां तक अध्ययन से ज्ञान होता है कि डूँगरपुर राज्य की स्थापना महारावल सामंतसिंह से है और वर्तमान में भी इसी के वंशज है और उसी समय के प्रमाणिक शिलालेख उपलब्ध है। दंत कथा के अनुसार माहप ने राहप के साथ मिलकर डुंगरिया भील को मारा था लेकिन प्रमाणिक सत्य नहीं है क्योंकि माहप के समय के साथ मेल नहीं खाता।

महारावल सामंतसिंह से पूर्व डूँगरपुर राज्य पर सर्वप्रथम क्षत्रप वंश (शक के) महाक्षत्रप (क्षत्रप वंश से) व परमार वंश का अधिकार था क्षत्रप, महाक्षत्रप काल के सिक्के जो सुरवानिया (बांसवाड़ा) से मिले है जो वि.सं. 238 से 410 तक के हैं वागड़ के परमार मालवा (म.प्र.) के परमार वंशी

राजा वाक्पति राजा के दूसरे पुत्र डंबरसिंह के वंशज थे। यह संभव है कि डंबरसिंह को वागड़ का प्रदेश जागीर में दिया हो। वागड़ के परमार की राजधानी बांसवाड़ा के अर्थूणा नगर थी। उस समय प्राचीन नगर नष्ट हो गया और उसके पश्चात् नूतन रूप से बसाया गया। यहां पर आज ही प्राचीन जैन मंदिर शिल्प विद्यमान है।

परमारों के पश्चात् सिसोदिया वंश का राज्य रहा। इस बात में विद्वानों की भिन्न भिन्न राय रही।

(1) रावल कर्णसिंह के पुत्र माहप का राज्याधिकार रहा

(2) रावल समरसिंह का पुत्र रत्नसिंह का मेवाड़ पर राज्याधिकार था।

वि.सं. 1303 अलाउद्दीन के आक्रमण में रतन सिंह मारा गया। उनके मरने के पूर्व ही रावल रतन सिंह ने अपने भाई आदि को किले को छोड़ अन्यत्र जाने का आदेश दिया। जिससे वे वापस मेवाड़ को अपने अधिकार में ले सके। वे सब वागड़ में आकर बस गए और पृथक् राज्य स्थापित किया।

दो शिलालेख जो वि.सं. 1228 फाल्गुन सुदि 7 का उदयपुर के जगत के देवी मंदिर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।

डूँगरपुर के मोलण गांव के पास माही नदी पर स्थित वीरेश्वर महादेव के मंदिर के दीवार पर है जो वि.सं. 1236 का है इन शिलालेखों से स्पष्ट है कि रावल सामंत सिंह ने डूँगरपुर राज्य पर सं. 1228 के पूर्व अधिकार कर लिया।

मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में उल्लेख किया है कि रावल सामंतसिंह जब चित्तौड़ का राजा था तब उसके छोटे भाई कुमारसिंह ने काफी सेवा की, सेवा से प्रसन्न होकर रावल सामंत ने अपना राज्य छोटे भाई को दे दिया। सामंत चित्तौड़ छोड़कर आहाड़ की ओर चला गया। इस समय वागड़ में चौरासीमल राजा था। उसके वहां एक डोम रहता था, उसकी पत्नी को राजा ने पासवान के रूप रखा। इस बात को लेकर डोम नाराज था, एक दिन वह अवसर पाकर वह बड़ोदा से भागकर आहाड़ पहुंच कर रावल सामंत को चौरासीमल पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। सामंत ने अच्छा अवसर देखकर वागड़ पर आक्रमण कर चौरासीमल को मार दिया और इस राज्य को अपने अधिकार में ले लिया।

रावल सामंतसिंह के वंशज जयंतसिंह, सिंहड़देव, विजयसिंह देव, देवपालदेव, वीरसिंह देव और मचुंड वागड़ के राजा रहे। मचुंड के पुत्र डूंगरसिंह था जिसने सं. 1415 के लगभग डूँगरपुर बसाया, किला बनाया। डूँगरपुर को राजधानी स्थापित की।

विस्तृत वर्णन श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर का वर्णन करते समय किया है।

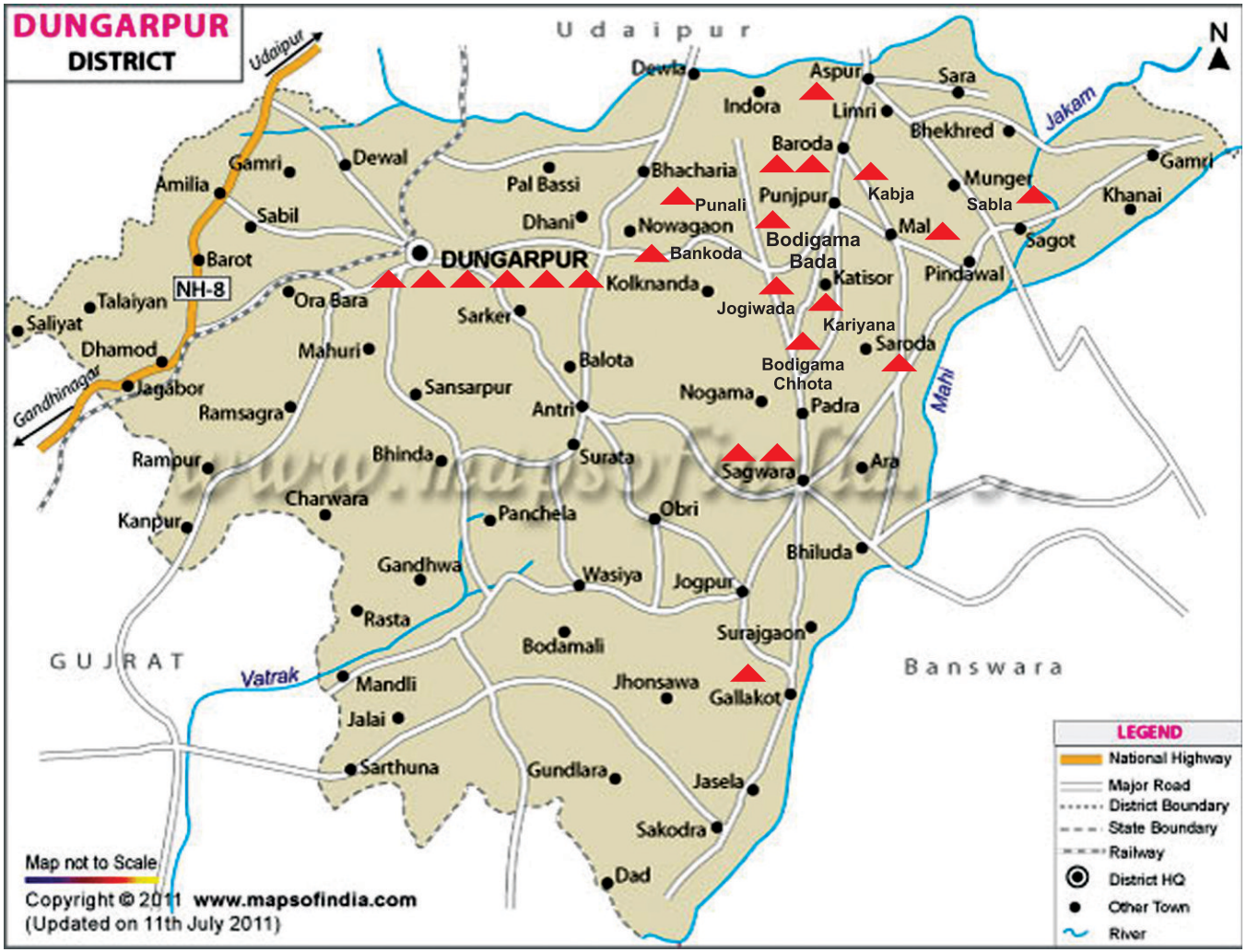

डूंगरपुर जिले का नक्शा